हे कान्हा मोहे, बहुत सतावत तोरी अखियां

हे कान्हा मोहे, बहुत सतावत तोरी अखियां
हे कान्हा मोहे, बहुत सतावत तोरी अखियां

चहुँ दिस में कहूँ ठौर नाही मोहे , मोरे पीछे पीछे आवत तोरी अखियां,
हे कान्हा मोहे, बहुत सतावत तोरी अखियां ॥

मेरो मन मंदिर में ऐसो बसो है , मोहे हर पल लुभावत तोरी अखियां,
हे कान्हा मोहे, बहुत सतावत तोरी अखियां ॥

त्रिभुवन में कोई ऐसो नाही, जैसो तीर चलावत तोरी अखियां,
हे कान्हा मोहे, बहुत सतावत तोरी अखियां ॥

भवसागर में भटक रहा हूं, काहे नाही पार लगावत तोरी अखियां,
हे कान्हा मोहे, बहुत सतावत तोरी अखियां।

भजन रचना : ज्योति नारायण पाठक

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/2579/title/hye-kanha-mohen-bahut-satawat-tori-ankhiya

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |